विचार बिन्दु

इतिहास के तजुर्बों से हम सबक नहीं लेते, इसीलिए इतिहास अपने आप को दोहराता है। –विनोबा

क्या है सभी धर्मों के सनातन नियम करने योग्य व वर्जित कर्म --क्यों फसाद धर्म के नाम पर!!!

विभिन्न धर्मों में दया, दान, परहित, मानवता, धर्म-प्रसारण और क्षमा के अलग-अलग नियम किंतु सभी धर्मों में इन्हें सर्वोपरि महत्व दिया हैं। इनके पालन करने के तरीके और प्राथमिकताएं अलग-अलग हो सकती हैं। सभी धर्म मानते है मानव की रचना गोड, ब्रह्मा, अल्लाह, यहोवा, अहुरमाजदा ने की है। सभी धर्मों में अनेक नामों से संबोधित ईश्वर एक है। तो सवाल यह है जब सब कुछ ईश्वर की रचना है तो फिर धर्म के नाम पर इतने फसाद क्यों -- क्या यह भी ईश्वर का आदेश है या मानव के खुराफाती दिमाग का काम है? सभी धर्मों में ईश्वर को अति दयालु बताया तो फिर अल्लाह तो लड़ने का आदेश दे नहीं सकता। आइए जरा देखें कि विभिन्न धर्मों में मानव हित की क्या क्या बातें कही है, क्या करने योग्य है और क्या वर्जित है और क्या है ईश्वर के संबंध में अवधारणाएं ::----

दया : हिंदू धर्म में दया को महत्वपूर्ण स्थान दिया गए। इसे बहु उवाचित वाक्य से समझा सकता की "दया धर्म का मूल है"। हिन्दू धर्म का मूल सिद्धांत है कि हर जीव-जंतु में ईश्वर का प्रतिरूप ही है। बौद्ध धर्म में भी प्राणी मात्र के लिए दया, सहानुभूति, सुख और मित्रता को महत्व है। सर्वजन हिताय का में सिद्धांत हैं। यहूदी धर्म में भी दया, दूसरों के प्रति करुणा, सहानुभूति का बहुत महत्व है किंतु बुरा कर्म करने वाले को क्षमा से पहले पश्चाताप कर सुधरना चाहिए, यह अपेक्षा भी है। इस्लाम में भी दया, 'रहमत' का उतना ही बड़ा स्थान है जितना हिन्दू, बौद्ध धर्म में है। खुदा को सबसे बड़ा दयालु और क्षमाशील माना है और इस्लाम के अनुयायियों से यह अपेक्षा की जाती की दूसरों के प्रति दयालु और क्षमाशील रहे। ईसाई धर्म में भी दया,क्षमा और प्रेम के उपदेश को बड़ा ऊंचा स्थान है।

दान : हिंदू और बौद्ध धर्म में दान का उपदेश है। दान से पुण्य मिलता है, मन शुद्ध होता है। बौद्ध धर्म के अनुसार भी दान से, धीरे-धीरे लालच की प्रवृति में कमी आती है। ईसाई धर्म में भी दान को उच्च महत्व दिया जाता है। किसी व्यक्ति के प्रति उदार होना ईसाई धर्म में महत्वपूर्ण है। इस्लाम में दान को जकात नाम से जाना जाता है। इस्लाम धर्म के पांच प्रमुख सिद्धांतों में जकात है और इस्लाम के हर अनुयाई से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे अपनी संपति का एक हिस्सा, जरूरतमंदों की मदद में लगाना चाहिए। यहूदी धर्म में भी गरीबों, जरूरतमंदों को दान देना धार्मिक कर्तव्य माना गया है। पारसी धर्म में भी दान (खुदाई) को अत्यधिक पवित्र कार्य माना जाता है और दान कर अहुर माजदा की कृपा की मनोकामना की जाती है।

परहित: सरस धर्म नहीं भाई, यह हिंदू धर्म के मूल सिद्धांतों में माना गया है। स्व से पहले दूसरों का सुख सोचना, हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण है। बौद्ध धर्म में माना जाता है कि परहित "बोधिसत्व -- उच्चतम ज्ञान" प्राप्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सभी प्राणियों के कल्याण के लिए काम करना, बौद्ध धर्म में महत्वपूर्ण है। ईसाई धर्म में परहित को 'प्रेम' और 'सेवा' के रूप में देखा जाता है। दूसरों की सेवा करना, और उनकी भलाई के लिए काम करना, ईसाई धर्म में महत्वपूर्ण है। इस्लाम में परहित को 'इख़्लास' (ईश्वर के प्रति समर्पण) के रूप में देखा जाता है। दूसरों के लिए निस्वार्थ भाव से काम करना, इस्लाम में महत्वपूर्ण है। यहूदी धर्म में भी सभी मानने वालों से आशा की गई है कि दूसरों की मदद करे दुखों के समय में उनके प्रति दया भाव से व्यवहार करना चाहिए। दुनिया का शायद ही कोई धर्म हो जिसमें दान का महत्व नहीं हो।

ईश्वर के बारे में अवधारणाएँ : कुछ धर्म एकेश्वरवादी हैं जैसे :- ईसाई धर्म, इस्लाम और यहूदी धर्म। कई धर्म बहुदेववादी हैं, जो कई देवताओं को मानते है, जैसे हिंदू धर्म। अज्ञेयवाद में ईश्वर के अस्तित्व या गैर-अस्तित्व के बारे में कोई मत नहीं हैं, ईश्वर को जानना संभव नहीं लगता। नास्तिक ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हैं। एकेश्वरवाद: ईश्वर को आमतौर पर सर्वोच्च सत्ता, निर्माता और धार्मिक विश्वास की प्रमुख आधार के रूप में देखा जाता है। ईसाई के अनुसार गॉड को पिता, यशु को पुत्र और पवित्र आत्मा को अर्थात एक ईश्वर के तीन रूप माने है। इस्लाम में, ईश्वर को अल्लाह के रूप में जाना जाता है, और उसे एक और अविभाज्य माना जाता है। यहूदी धर्म में, ईश्वर को यहोवा के रूप में जाना जाता है, और उसे एक और अविभाज्य माना जाता है।

बहुदेववादी धर्मों में, ईश्वर को कई देवताओं या देवी-देवताओं के रूप में माना जाता है। हिंदू धर्म में, विभिन्न देवताओं और देवी-देवताओं की पूजा की जाती है, जैसे कि विष्णु, शिव, दुर्गा और लक्ष्मी। इन देवताओं को अक्सर एक ही परमेश्वर के विभिन्न पहलुओं के रूप में देखा जाता है। अन्य धर्मों में ईश्वर की अवधारणाएँ:- बौद्ध धर्म: बौद्ध धर्म में, ईश्वर की अवधारणा नहीं है। बौद्ध धर्म कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत पर केंद्रित है, और इसका लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना है। जैन धर्म:जैन धर्म में, ईश्वर की अवधारणा नहीं है। जैन धर्म अहिंसा, तपस्या और आत्म-नियंत्रण पर केंद्रित है। पारसी धर्म: पारसी धर्म में, ईश्वर को अहुर माजदा के रूप में जाना जाता है। अहुर माजदा ज्ञान की एक सर्वोच्च और प्रकाशमान शक्ति है, जो अच्छाई और न्याय का प्रतिनिधित्व करता है। नास्तिक लोग धर्मों में, ईश्वर के अस्तित्व को पूरी तरह से नकार दिया जाता है। वे मानते हैं कि ईश्वर जैसी कोई चीज नहीं है। निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि विभिन्न धर्मों में ईश्वर की अवधारणाएँ अलग-अलग हैं, लेकिन वे सभी मानते हैं कि उसकी मानव जीवन एक महत्वपूर्ण हैं।

सभी धर्म मानते है मानव की रचना गोड, ब्रह्मा, अल्लाह, यहोवा, अहुरमाजदा ने की है। सभी धर्मों में अनेक नामों से संबोधित ईश्वर एक है। तो सवाल यह है जब सब कुछ ईश्वर की रचना है तो फिर धर्म के नाम पर इतने फसाद क्यों -- क्या यह भी ईश्वर का आदेश है या मानव के खुराफाती दिमाग का काम है?

पुनर्जन्म, स्वर्ग, नरक, और आत्म के संबंध में विभिन्न धार्मिक अवधारणाएं इस प्रकार है:- हिंदू, जैन, बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म की अवधारणा है। हिंदू और जैन धर्म के अनुसार आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में जाती है, जब तक कि वह मोक्ष प्राप्त नहीं कर लेती। पुनर्जन्म का चक्र कर्म के सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें आत्मा के कर्मों के अनुसार अगले जन्म में उसकी स्थिति निर्धारित होती है। आत्मा का उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है, जिसमें वह अपने असली स्वरूप को पहचान लेती है और संसार के बंधनों से मुक्त हो जाती है। किंतु गीता के अनुसार तो आत्मा केवल दृष्टा है, कोई कर्म नहीं करती। बौद्ध धर्म में आत्मा के पुनर्जन्म की अवधारणा नहीं है, यह अनात्म धर्म है किंतु अच्छे बुरे कर्मों का प्रभाव पुनर्जन्म पर पड़ता है।

स्वर्ग और नरक: हिंदू धर्म में स्वर्ग और नरक की अवधारणा है। जहां अच्छे कर्म करने वाले लोग स्वर्ग में जाते हैं और बुरे कर्म करने वाले लोग नरक में जाते हैं। हालांकि, हिंदू धर्म में स्वर्ग और नरक को आत्म का अस्थाई निवास माना जाता है। जैन धर्म में आत्मा को शाश्वत और अमर माना जाता है, जो एक शरीर से दूसरे शरीर में जाती है। यहां भी आत्मा का उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है। ईसाई धर्म में भी स्वर्ग और नरक की अवधारणा है। अच्छे और बुरे कर्म से स्वर्ग में मिलता हैं और बुरे लोग नरक में जाते हैं। हिंदू धर्म से भिन्न ईसाई धर्म में स्वर्ग और नरक को शाश्वत माना जाता है। व्यक्ति के कर्मों के अनुसार यह मिलते है। इस्लाम में स्वर्ग और नरक की अवधारणा है, जहां अच्छे लोग जन्नत में और बुरे लोग जहन्नम में जाते हैं। इस्लाम में जन्नत और जहन्नम रुह के स्थाई निवास माने जाते है। अब्राहमिक धर्मों -- ईसाई, इस्लाम, यहूदी धर्म में पुनर्जन्म की धारणा नहीं है। ईसाई, यहूदी, इस्लाम धर्म में आत्मा की अवधारणा है। मृत्यु के बाद आत्मा का क्या होता है, इस बारे में विभिन्न मान्यताएं हैं।

मानव सृजन: हिंदू धर्म के अनुसार, ब्रह्मा ने मनु और शतरूपा को बनाया, जो पहले मानव थे। सिख धर्म के अनुसार सभी मनुष्य भगवान की संतान हैं, बराबर है। इसमें आदम, हव्वा, मनु, शतरूपा है जैसी कोई कहानी नहीं। इस्लाम में प्रथम पुरुष और स्त्री के बारे में कुरआन के अनुसार सबसे पहले आदम को अल्लाह ने मिट्टी से बनाया और हव्वा (स्त्री) को आदम की पसली से बनाया। उन्हें अल्लाह का पहला नबी और उनकी पत्नी के रूप में माना जाता है। ईसाई धर्म के पवित्र ग्रंथ बाइबल में पहले मानव की बात कुरान जैसी ही आदम, हव्वा की बात लिखी है। यहूदी धर्म में भी तोरात धार्मिक किताब में आदम और हव्वा को प्रथम पुरुष और स्त्री माना जाता है। आदम को भगवान ने मिट्टी से बनाया और हव्वा को आदम की पसली से बनाया।

धर्म के प्रसारण - अंतरण के संबंध में भिन्न धर्मों में एक मत नहीं होकर भिन्न दृष्टिकोण हैं। कुछ धर्मों में, दूसरों को अपने धर्म में शामिल करने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास करना महत्वपूर्ण माना जाता है। कुछ धर्मों में यह व्यक्ति के विश्वास इच्छा की बात हैं। हिंदू, बौद्ध, सिख धर्म में दूसरे धर्म मानने वालों के धर्मांतरण को प्रोत्साहित नहीं किया जाता। इन धर्मों में माना गया है कि व्यक्ति किस धर्म में विश्वास रखता है यह उसकी पसंद है। कोई भी स्वप्रेरणा से कोई धर्म माने किंतु कोई संगठित प्रयास अन्य धर्मावलंबियों को अपने धर्म में शामिल करने को प्रोत्साहन नहीं। यही कारण है कि हिंदू धर्म में से ही जैन, बौद्ध, सिख आदि धर्म निकले। एक नास्तिक भी हिन्दू धर्म में शामिल है। इस्लाम मे गैर मुस्लिमों को इस्लाम धर्म में परिवर्तन को प्रोत्साहन है किंतु यह स्वैच्छिक होना चाहिए। इसे बुलावा माना जाता है। लेकिन इस्लाम में एक मुसलमान के लिए दूसरे धर्म को मानना निषेध है, पाप मन गया है। ईसाई धर्म में दूसरे धर्म वालों को ईसाई धर्म में धर्मांतरण को प्रोत्साहन मिलता है। यशु की शिक्षा के अनुयायियों से यह अपेक्षा की गई है के वे दूसरे देशों में यशु की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार करें। यहूदी धर्म में धर्मांतरण को प्रोत्साहन नहीं। इसमें धर्म एक व्यक्तिगत पसंद का विषय माना जाता है।

निष्कर्ष में यह माना जा सकता है कि धर्म प्रचार-प्रसार के विभिन्न धर्मों के विचार भिन्न-भिन्न है। कुछ धर्मों में धर्म प्रचार-प्रसार व दूसरों का अपने धर्म में परिवर्तन करना एक धार्मिक कर्तव्य माना जाता है तो कुछ में धर्म को व्यक्तिगत पसंद नापसंद माना जाता है।

और अंत में जानले की सनातन क्या है? सनातन, मतलब शाश्वत मतलब अपरिवर्तनीय और यह है वे नियम जो सब धर्मों में समान रूप से बताए गए है जो हर मनुष्य को मानने और करने चाहिए यथा सत्य, अहिंसा, दान, दया, क्षमा, परोपकार। इसी प्रकार से हर धर्म में मनुष्यों के लिए वर्जित, अवांछनीय कर्म बताए है यथा हिंसा, झूठ, चोरी, दूसरों का नुकसान, आदि। जैन धर्म में तो अपरिग्रह का नियम है जिसके अनुसार आवश्यकता से अधिक संग्रहण अनुचित है। बौद्ध धर्म में किसी के द्वारा किसी के भी साथ अविवेकपूर्ण व्यवहार, नशा, कामुक गतिविधियों को भी अनुचित माना है।

इसके अलावा हर धर्म में प्रार्थना, पूजा की अलग-अलग पद्धतियां है जो ईश्वर, अल्लाह ने नहीं स्वयं मनुष्य ने बनाई है, कुछ समाज को सुव्यवस्थित रखने के लिए और कुछ निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए। यह समय-समय पर परिवर्तित होती आई है, इतिहास इसका गवाह है। इनमें कोई शाश्वतता नहीं है। वर्तमान में धर्म का सबसे कुत्सित उपयोग, सत्ता, वर्चस्व, शोहरत प्राप्त करने और बनाए रखने के लिए हो गया है --- सत्ता, डर, चाहे वह मठाधीशों, महंतों, धर्मप्रचारकों आदि की हो या राजनेताओं की हो या कोई आतंकी संगठन हो, कोई स्थानीय गिरोह हों।

चलते-चलते इस पर भी विचार कर लें कि कौन से धर्म में स्त्रियों की अपनी पसंद का काम करने, अपने विचार रखने, स्वतंत्रता आदि की मनाही है जो कुछ संगठन, देश धर्म के नाम पर करते है ---- यह सब पूर्णत: मानव दिमाग की खुराफात ---।

–अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

तकनीक बन रही है जन कल्याण का माध्यम

डॉ. सुबोध अग्रवाल, (आईएएस)।

एक बात साफ हो जानी चाहिए कि तकनीक मात्र उपकरण बनें तो यह मानवता के हित में नहीं हो सकती। ऐसे में तकनीक को जनकल्याण का माध्यम बनाना होगा। डिजिटल युग में बहुत कुछ बदला है। हमारे सोच का तरीका बदला है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में आज सामान्य मानव मन से भी अधिक तेजी से तकनीक काम करने लगी है। तकनीक ने इतना विकास कर लिया है कि अब मशीनें सोचने लगी है। हमारे चिंतन और मनन को प्रभावित करने लगी है। इसमें कोई दो राय नहीं कि तकनीक ने जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रवेश करने के साथ सहज बनाया है। समय तो यहां तक बदल गया है कि अब पढ़ना-लिखना ही नहीं तकनीक ने सोचना और निकश तक पहुंचना आरंभ कर दिया है। यह विकास का उजला पक्ष होने के साथ ही इसके पीछे छुपा काला पक्ष भी गंभीर है। हांलाकि प्रकृति अपना काम कर रही है और वह लगातार हमें चेतावनी देती जा रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) हमारे जीवन का हिस्सा बन चुकी है। वह हमारे निर्णयों को प्रभावित कर रही है, हमारी प्राथमिकताएं तय कर रही है, और हमारी सोच को प्रभावित कर रही है। इस दौर में हमें ऐसे नेतृत्व की जरूरत है जो तकनीक के चमत्कारों को संवेदनशीलता और दूरदृष्टि के साथ दिशा दे।

एआई एक्शन समिट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सटीक और सामयिक टिप्पणी की है। दरअसल टेक्नोलॉजी का लोकतंत्रीकरण होना चाहिए। हमें जन-केंद्रित एप्लिकेशन बनाने चाहिए। साथ ही हमें साइबर सुरक्षा, दुष्प्रचार और डीपफेक जैसी चुनौतियों का समाधान भी करना होगा। डिजिटल नवाचार का उपयोग अब पारदर्शिता, सहभागिता और संवेदनशील सेवा-प्रणाली के रूप में सामने आ रहा है। हमारा देश आज एआई और सेमीकंडक्टर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव रख रहा है। 2024 में केंद्र सरकार द्वारा अनुमोदित इण्डिया एआई मिशन इसका जीता-जागता उदाहरण है। इस मिशन के तहत 10,300 करोड़ रु. के निवेश से देश में एक विश्वस्तरीय एआई कंप्यूटिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य है 18,693 जीपीयू से लैस साझा कंप्यूटिंग क्षमता विकसित कर भारत को वैश्विक एआई शक्तियों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा करना है। विशेषज्ञों को मानना है कि यह सिस्टम ओपन-सोर्स एआई मॉडल डीपसीक से 9 गुना अधिक सक्षम होगा और चैटजीपीटी जैसी प्रणालियों की दो-तिहाई शक्ति तक पहुंचेगा। यानी यह केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं होगी अपितु डिजिटल क्षेत्र में भारत को आत्मसम्मान व दुनिया के देशों की अग्रणी पंक्ति में खड़ा करने की घोषणा है।

दरअसल तकनीक का उपयोग मानव कल्याण के उद्देश्य से होना चाहिए। सरकारें इस बात को समझती है और यही कारण है कि ई-गवर्नेंस से लेकर डिजिटल शिक्षा, एआई आधारित स्वास्थ्य सेवाओं और नागरिक सुविधा केंद्रों तक हर नीति के केंद्र में आमआदमी है, सिस्टम नहीं। राज्यों में तकनीक को 'डिजिटल एक्सेस' के बजाय 'डिजिटल एम्पावरमेंट' के रूप में उपयोग किया जाने लगा है। और यही बदलाव राज्यों को एक सॉफ्ट-टेक्नोलॉजिकल स्टेट बना रहा है। राज्यों में चल रहे हरित अभियान, जल संरक्षण योजनाएं, सौर ऊर्जा प्रोत्साहन और ईको-टूरिज्म और इसी तरह की अन्य पहल इस सोच के साथ धरातल पर उतर रही हैं। यहां तक कि मानसिक स्वास्थ्य अभियान, डिजिटल डिटॉक्स क्लासेस और संस्कार संवाद जैसे कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। ताकि युवा स्मार्टफोन के स्क्रीन से आगे सोच सकें और अपनी जड़ों से जुड़े रहें। आज सवाल यह नहीं कि हमें तकनीक से डरना चाहिए या नहीं, बल्कि यह है कि हम तकनीक को किस नैतिक दायरे में संचालित कर सकते हैं। केन्द्र के साथ ही राज्यों की सरकारें इसे समझने लगी है और यह कारण है कि राज्यों द्वारा तकनीक का उपयोग भविष्य की संभावनाओं और जनकल्याण नीतियों के रुप में सामने आ रहा है।

–डॉ. सुबोध अग्रवाल,
(आईएएस)
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
राजस्थान सरकार

प्रतापगढ़ प्रशासन का नवाचार "मिशन बाबुल की बिटिया" एकल महिलाओं का सारथी बना

सुश्री नवधा परदेशी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 2047 तक राजस्थान को विकसित राज्य बनाने की यात्रा में प्रत्येक का विकास विशेष रूप से महिलाओं का सशक्तिकरण-केवल एक सपना नहीं बल्कि एक अपरिहार्य आवश्यकता है। जब एक बेटी आगे बढ़ती है, तो पूरा परिवार प्रगति करता है। जब वह सशक्त होती है तो समाज सुसंस्कृत बनता है और जब वह राष्ट्र निर्माण में आगे आती है तब राष्ट्र स्वयं उठ खड़ा होता है। यह दर्शन भारतीय संविधान की आत्मा में रचा-बसा है-'सर्वोदय' का सिद्धांत, यानी सबका उत्थान, जिसमें न्याय, समानता और गरिमा हर नागरिक का अधिकार है।

इन्हीं मूल्यों से प्रेरणा लेकर और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी तथा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विज़न से बल पाकर राजस्थान सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि विकास केवल शहरों, आंकड़ों और रिपोर्टों में सीमित न रह जाए बल्कि अंतिम गांव की अंतिम महिला विशेषकर एकल महिला तक पहुंचे जो आज भी अक्सर अंधेरों में है। विशेषकर जनजातीय, परित्यक्त या सामाजिक रूप से हाशिए पर खड़ी महिलाओं और बालिकाओं के लिए सरकार ने कई योजनाएं आरंभ की हैं-जैसे कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना, लाडो प्रोत्साहन योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, साथ ही केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, नमो ड्रोन दीदी और मिशन शक्ति जैसी योजनाएं भी इन्हें संबल दे रही हैं।

बाबुल की बिटिया - हर एकल महिला के घर जाकर किया सर्वे, पूछा: आपको क्या आवश्यकता है?

आमजन की वास्तविक पीड़ा को सुनने और समझने की उस पारदर्शी प्रक्रिया से यह प्रयास जन्मा जिसे हम जनसुनवाई और रात्रि चौपाल कहते हैं जहां अधिकारी अपने दफ्तरों से निकलकर आमजन के बीच पहुंचते है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा नियमित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक लेकर सुनिश्चित कर रहे है कि जनसमस्याओं का त्वरित और गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हो। आमजन की समस्याओं का निस्तारण महज कागजी या औपचारिक न हो यह संतुष्टिपूर्ण और समस्यबद्ध हो।

इसी क्रम में जनजाति बाहुल्य जिले प्रतापगढ़ के गावों में रात्रि चौपाल के दौरान खुले आसमान के नीचे राजस्थान के सुदूर गांवों की उन महिलाओं की कहानियाँ सामने आईं, जो न विधवा थीं, न ही तलाकशुदा, मगर जीवन के संघर्ष में अकेली पड़ गई थीं। रात्रि चौपाल के दौरान सामने आया कि कई जनजाति प्रथाओं के कारण महिलाओं का उनके पति द्वारा परित्याग कर दिया जाता है और वह सालों पति के इंतजार में बीता देती है। सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए आवश्यक दस्तावेजों के अभाव के कारण उन्हें योजनाओं का लाभ नहीं मिलता क्योंकि वह न तो विधवा की श्रेणी में आती है ना ही तलाकशुदा की और ना ही परित्यक्ता की। यह भी देखा गया कि एकल महिआएं जागरूकता के अभाव में योजनाओं के लाभों से वंचित है।

हर घर दस्तक, हर एकल महिला के घर पहुंचा प्रशासन :-इसी समस्याओं को दूर करने के लिए प्रतापगढ़ जिला कलेक्टर डॉ. अंजलि राजोरिया ने मिशन मोड में डाटा-आधारित अभियान शुरू किया। इस अभियान के अंतर्गत आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और विशेष प्रशिक्षित फील्ड टीमें घर-घर पहुंची, गाँव-गाँव गईं, यहाँ तक कि नावों के माध्यम से जिले के दूरस्थ गांव कुपड़ा तक भी पहुंची। सर्वे टीमों को एक फार्म दिया गया जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रश्न थे जैसे कि क्या उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है ? जैसे कि उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना। क्या उनके पास मकान का पट्टा है? क्या उन्हें किसी और प्रकार की समस्या है? क्या उन्हें किसी प्रकार का मानसिक तनाव है? क्या उनके बच्चे विद्यालय जा रहे हैं? क्या उन्हें फ्री लीगल एड की आवश्यकता है?

अभियान की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ:-

48,548 महिलाओं का सर्वेक्षण जबकि प्रारंभिक लक्ष्य 36,336 था।

8 हजार 433 अकेली महिलाएं विभिन्न योजनाओं के लिए पात्र पाई गईं।

7 हजार 389 महिलाओं को योजनाओं से जोड़ा गया।

282 महिलाओं को परित्यकता प्रमाण पत्र जारी किए गए,।

855 महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लिए चिन्हित किया।

4 हजार 585 महिलाएं प्रधानमंत्री आवास योजना में चिन्हित की गईं। 886 महिलाओं को स्वच्छ भारत मिशन में चिन्हित की गई।

795 महिलाओं को मनरेगा के जॉब कार्ड दिए गए।

674 महिलाओं के लिए भूमि पट्टों की प्रक्रिया शुरू हुई।

5 हजार 486 महिलाओं को स्वास्थ्य जांच का लाभ मिला।

248 महिलाओं को पालनहार योजना के अंतर्गत सहायता मिली।

विकसित राजस्थान 2047: जहां विकास की शुरुआत 'बेटी' से होती है

'बाबुल की बिटिया इस बात का प्रमाण है कि जब शासन संवेदनशील होता है, तब परिवर्तन स्वत: होते हैं। जब प्रशासन सुनना सीखता है, तब वो बदलना भी सीखता है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा हमेशा इस बात पर ज़ोर देते रहे हैं कि आखिरी कतार में खड़े व्यक्ति तक पहुँचना ही सुशासन है। "सर्वजन हिताय" के मंत्र से प्रेरित होकर वे मानते हैं कि सरकार नीतियों में नहीं, गांव की गलियों में और ज़रूरतमंद के घरों में जीवंत होती है। उनकी प्रेरणा से आज अधिकारी फील्ड में उतर रहे हैं, नवाचार कर रहे हैं और सबसे अहम-संवेदनशीलता से सेवा कर रहे हैं। राजस्थान जब 2047 के अपने सपने की ओर अग्रसर हो रहा है, बाबुल की बिटिया एक जीवंत उदाहरण है P2G2—Pro Poor, Proactive Good Governance का, जहाँ नीतियाँ केवल कागज़ों पर नहीं बनतीं, बल्कि आखिरी महिला के द्वार तक पहुंचती हैं। यह पहल दर्शाती है कि हर बेटी मायने रखती है और हर बेटी चमकेगी भी और आगे भी आएगी।

–सुश्री नवधा परदेशी,
सहायक जनसंपर्क अधिकारी, प्रतापगढ़,
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान

शाहपुरा रोड पर स्थाई अतिक्रमण को लेकर राजस्थान हाईकोर्ट सख्त

पाटन, (निसं)। शहर की जीवन रेखा माने जाने वाली शाहपुरा रोड पर हो रहे स्थायी अतिक्रमण को लेकर अब राजस्थान हाईकोर्ट ने सख्त रुख अपना लिया है। आस्था जन कल्याण सेवा समिति द्वारा दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने राज्य सरकार सहित जिले के संबंधित अधिकारियों से तीन सप्ताह में स्थिति स्पष्ट करने और अतिक्रमण हटाने की स्टेटस रिपोर्ट मांगी है। याचिका में बताया गया है कि मांकड़ी फाटक से सिरोही नदी तक प्रस्तावित फोरलेन सड़क के लिए 80 फीट जमीन का अधिग्रहण किया गया था। बावजूद इसके, राजनैतिक संरक्षण में कई लोगों ने सरकारी भूमि पर कब्जा कर लिया और निर्माण कर सड़क को 60 फीट तक सीमित कर दिया। आरोप है कि नगर पालिका ने फर्जी दस्तावेजों के आधार पर पट्टे भी जारी कर दिए।

हाईकोर्ट की डबल बेंच-न्यायमूर्ति संजीव प्रकाश शर्मा व न्यायमूर्ति दिनेश मेहता ने 21 जुलाई को हुई सुनवाई में मुख्य सचिव, जिला कलेक्टर सीकर, उपखंड अधिकारी नीमकाथाना, लोक निर्माण विभाग और नगर पालिका के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे तीन सप्ताह में विस्तृत रिपोर्ट पेश करें। साथ ही याचिकाकर्ता पक्ष को सभी आवश्यक विभागों को पार्टी बनाकर संशोधित याचिका एक दिन में प्रस्तुत करने के निर्देश भी दिए गए हैं। वरिष्ठ अधिवक्ता प्रवीण बलवदा की टीम की ओर से अधिवक्ता भावना चौधरी व मोहित बलवदा ने याचिका में बताया कि शाहपुरा रोड को नगर परिषद के मास्टर प्लान में 30 मीटर (लगभग 100 फीट) चौड़ा दर्शाया गया है। ऐसे में अतिक्रमण हटाए बिना फोरलेन योजना पर काम करना असंभव है। पीआईएल में कहा गया है कि गांवड़ी मोड़ से लेकर सिरोही नदी तक के पूरे बेल्ट पर अवैध रूप से बड़े-बड़े व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स, आवासीय प्लॉट्स पर व्यावसायिक निर्माण तथा बिना स्वीकृति के भवन बना दिए गए हैं। याचिका दाखिल करने से पूर्व आस्था जन कल्याण सेवा समिति ने प्रशासन को कानूनी नोटिस भेजा था, जिसके बाद सीमांकन की प्रक्रिया प्रारंभ की गई, लेकिन संतोषजनक कार्रवाई नहीं होने पर यह मामला हाईकोर्ट तक पहुंच गया। कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि अगली सुनवाई तीन सप्ताह बाद होगी।

- **कोर्ट ने राज्य सरकार सहित जिले के संबंधित अधिकारियों से तीन सप्ताह में स्थिति स्पष्ट करने और अतिक्रमण हटाने की स्टेटस रिपोर्ट मांगी**

राशिफल गुरूवार 24 जुलाई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, पुनर्वसु नक्षत्र सायं 4:44 तक, हर्षण योग प्रात: 9:51 तक, चतुष्पद करण दिन 1:35 तक, चन्द्रमा दिन 10:59 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज अमृत सिद्धि योग और गुरू पुष्य योग सायं 4:44 से सूर्योदय तक है। आज देव पितृकार्य अमावस्या, हरियाली अमावस्या, सरस माधुरी जयन्ती करकट पूजा है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:31 तक, चर 10:52 से 12:33 तक, लाभ-अमृत 12:33 से 3:54 तक, शुभ 5:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:51, सूर्यास्त 7:15

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृष
परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मिथुन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
अपने अति आवश्यक कार्यों को दिन के मध्यान्ह पूर्व करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह अष्टम चन्द्रमा शुभ नहीं है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मीन
घर-परिवार में धार्मिक-सामाज